डॉ० सतीश चन्द्र पाठक, हिन्दी विभाग,
एस०एस० कॉलेज, जहानाबाद

बी०ए० पार्ट – I हिन्दी प्रतिष्ठा के छात्रों हेतु

प्रश्न – आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी का हिन्दी साहित्य में योगदान का उल्लेख कीजिए।

उत्तर – भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने हिन्दी साहित्य में एक क्रान्तिदर्शी के रूप में अपनी पहचान बनाई थी। उन्होंने अपने अल्प काल में हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं में लेखनी चलाकर एक सर्वथा नवीन मार्ग का सूत्रपात किया था। अभी तक हिन्दी प्राचीनता के निर्मोक से अलग भी नहीं हो पायी थी कि भारतेन्दु का अवसान हो गया। इससे हिन्दी साहित्य को अपूरणीय क्षति हुयी। भारतेन्दु ने जिस क्रान्ति का सूत्रपात हिन्दी साहित्य में किया था, उस पर आज प्रश्न चिह्न खड़ा हो गया था। लगता था कि हिन्दी आज बेसहारा होकर मार्ग भटक जाएगी। अभी-अभी तो हिन्दी ने आधुनिकता के मार्ग में डग भरने आरंभ ही किया था कि भारतेन्दु का मार्ग दर्शन समाप्त हो गया। ऐसे विकट समय में हिन्दी के सहारा आ० महावीर प्रसाद द्विवेदी का प्रादुर्भाव हुआ। इनका जन्म 15 मई 1864 ई० को रायबरेली जिले के दौलतपुर गाँव में हुआ था। इनके पिताजी का नाम राम सहाय द्विवेदी था। इनकी आरंभिक शिक्षा गांव की पाठशाला में हुयी। इनका परिवार आर्थिक रूप से बड़ा विपन्न था। इसके कारण इनकी शिक्षा अव्यवस्थित रही। घर पर ही संस्कृत का अध्ययन किया बाद में मैट्रिक की परीक्षा पास की और बम्बई चले गये। वहाँ टेलीग्राफ की शिक्षा ली और रेलवे में क्लर्क के पद पर नियुक्त हो गये। द्विवेदी जी अपने कार्य में अत्यंत कर्मठ एवं इमानदार थे। इसके चलते वे नौकरी में प्रगति करते चले गए। वे अत्यंत स्वाभिमानी व्यक्ति थे। अंग्रेज अधिकारियों से मतभेद होने के कारण इन्होंने नौकरी से त्यागपत्र दे दिया। यह इनके लिए बड़ा ही साहसिक निर्णय था फिर भी ये पीछे न मुड़े।

1913 ई० में इन्होंने 'सरस्वती' पत्रिका का संपादन स्वीकार किया और इसे उन्होंने एक नया आयाम दिया। इन्होंने सरस्वती के माध्यम से हिन्दी साहित्य एवं इसके साहित्यकारों को भी मार्गदर्शन किया। इन्होंने न केवल स्वयं निबंध, समालोचना, संस्मरण इत्यादि का लेखन किया वरन अनेक लेखकों को भी लिखने के लिए प्रोत्साहित किया। उनकी रचनाओं को सुधारा और उन्हें प्रकाशित किया। मैथिलीशरण गुप्त, सियारामशरण गुप्त जैसे अनेक साहित्यकार इनके मार्गदर्शन में साहित्य जगत में उच्चासन पर आसीन हुए। उस समय किसी पत्रिका का संपादन और प्रकाशन कितना दुष्कर कार्य रहा होगा यह केवल अनुमान का ही विषय हो सकता है। उन्होंने अनेक लोगों के नाम से निबंध लिखे। कहा जाता है कि अनेक बार पूरी की पूरी पत्रिका अनेक लोगों के नाम पर प्रकाशित करते थे।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने अपने जीवन काल में लगभग एक सौ ग्रंथों का प्रणयन किया था। अद्भुत आलाप, रसज्ञ रंजन, साहित्य सीकर, विचित्र चित्रण, कालिदास की निरंकुशता, सम्पत्तिशास्त्र, हिन्दी भाषा की उत्पत्ति - आदि ग्रंथ अत्यन्त प्रसिद्ध हुए। द्विवेदी जी उच्च कोटि के निबंधकार थे। हिन्दी साहित्य में निबंध लेखन की परम्परा को इन्होंने परिष्कृत किया तथा नये लेखकों को प्रोत्साहित किया। इनकी इसी विशिष्टता के कारण इन्हें हिन्दी साहित्य का 'जानसन' कहा जाता है। जानसन अंग्रेजी के प्रख्यात निबंधकार थे।

द्विवेदी जी का हिन्दी भाषा एवं साहित्य के प्रति सबसे बड़ा योगदान यह रहा कि उन्होंने भाषा की निरंकुशता को समाप्त कर दिया।

यदि भाषिक अराजकता दूर नहीं हुई होती तो हिंदी भाषा कदापि आगे नहीं बढ़ पाती। वे ऐसे प्रथम आचार्य थे जिन्होंने एक साथ भाषा, साहित्य एवं साहित्यकारों का परिष्कार किया और हिंदी को उच्च शिखर तक पहुँचाने की पीठिका तैयार की। इनके विशिष्ट योगदान के कारण इनके युग को द्विवेदी युग कहा जाता है। 1938 ईस्वी के 21 दिसम्बर को इस महान सपूत का महाप्रयाण हुआ।